बी.एस.ओ.ई.-145 : धर्म और समाज
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : BAG/ BAM
पाठ्यक्रम कोडः **BSOE-145**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.ई. -145 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. भारत में धर्म और समाज के प्रतिच्छेदन की व्याख्या कीजिए। 20

2. धर्म के समाजशास्त्र के विकास की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3. धार्मिक बहुलवाद की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। 10

4. क्या आदिवासी धर्म क्षीण हो रहे हैं? चर्चा कीजिए। 10

5. भारतीय संदर्भ में इस्लाम में जाति के तत्व का वर्णन कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. धर्मनिरपेक्षता क्या है? 06

7. पंथ और संप्रदाय के बीच अंतर करें। 06

8. सांप्रदायिक दंगों के मुख्य कारको का वर्णन कीजिए। 06

9. नागरिक धर्म क्या है? 06

10. धर्म और विज्ञान के बीच अंतर करें। 06

1. भारत में धर्म और समाज के प्रतिच्छेदन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर

प्रस्तावना और प्रतिच्छेदन का अर्थ

भारत में धर्म केवल ईश्वर या अलौकिक सत्ता के प्रति व्यक्तिगत विश्वास नहीं है। वह सामूहिक पहचान, नैतिक व्यवहार, पारिवारिक संस्कार, सांस्कृतिक प्रतीकों और सार्वजनिक संस्थाओं से भी जुड़ा हुआ है। समाज धर्म के रूप, संगठन और व्यवहार को प्रभावित करता है, जबकि धार्मिक मान्यताएँ सामाजिक संबंधों, अधिकारों और कर्तव्यों को अर्थ प्रदान करती हैं। दोनों के इस परस्पर संबंध को धर्म और समाज का प्रतिच्छेदन कहा जाता है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, आदिवासी तथा अन्य धार्मिक परंपराओं की उपस्थिति इस संबंध को विशेष रूप से विविध बनाती है। धर्म को एक स्थिर और सभी समुदायों में समान संस्था मानने के बजाय उसके ऐतिहासिक, क्षेत्रीय और वर्गीय संदर्भ को समझना आवश्यक है।

परिवार, विवाह और जीवन-संस्कार

धर्म और परिवार का संबंध जन्म से मृत्यु तक दिखाई देता है। नामकरण, दीक्षा, विवाह, मृत्यु-संस्कार और स्मृति-अनुष्ठान व्यक्ति को सामाजिक समुदाय से जोड़ते हैं। धार्मिक त्योहारों में परिवार के सदस्यों का एकत्र होना, बुजुर्गों से परंपरा सीखना और सामूहिक भोजन करना पीढ़ियों के बीच संबंध विकसित करता है। विवाह में धार्मिक रीति-रिवाज, समुदाय की अपेक्षाएँ और रिश्तेदारी के नियम महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। साथ ही शहरीकरण, शिक्षा, अंतरधार्मिक संपर्क और व्यक्तिगत पसंद पारिवारिक परंपराओं को बदलते हैं। अत: धर्म परिवार को प्रभावित करता है, लेकिन परिवार भी धार्मिक प्रथाओं को पुनर्व्याख्यायित करता है।

जाति, सामाजिक स्तरीकरण और परिवर्तन

भारतीय समाज के इतिहास में धार्मिक प्रतीकों और रीति-रिवाजों का संबंध जाति तथा सामाजिक श्रेणीकरण से रहा है। शुद्धता-अशुद्धता की धारणाएँ, भोजन संबंधी नियम, विवाह-सीमाएँ और कर्मकांड में विशिष्ट भूमिकाएँ कई क्षेत्रों में जातिगत अंतर से जुड़ी थीं। समाजशास्त्र यह भी पूछता है कि ऐसी व्यवस्थाओं से किन समूहों को प्रतिष्ठा मिली और किन्हें बहिष्कार झेलना पड़ा। किंतु धर्म